आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:26-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को हमारे भारत के सर्व-श्रेष्ठ सेवाधारी बनाने वाले, पवित्र-भूमि, देव-भूमि भारत के पिता शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - तुम भारत के मोस्ट वैल्युबुल (सबसे श्रेष्ठ) सर्वेन्ट हो, तुम्हें अपने तन-मन-धन से परमपिता-परमात्मा शिवबाबा की श्रीमत् पर चलकर इस पर रामराज्य स्थापन करने में मदद करनी हैं.

आज भी बहुत आत्मायें यह प्रश्न पुछती है कि ब्रहमाकुमारीस का उद्देश्य क्या है? अव्यक्त बापदादा कि लास्ट मुरली में बाबा ने हमें बताया की सर्व भारतवासियों को स्पष्ट बताओ कि भारत का पिता अभी गुप्त वेश में भारत को फिर से स्वर्ग बनाने के लिए आ गये हैं. परमात्मा स्वयं इस धरा पर आकर सर्व श्रेष्ठ भूमि भारत में सतयुग की स्थापना करने का कार्य कर रहे हैं. वह रचयिता है, ज्ञान का सागर है, सर्वशक्तिमान है और कल्याणकारी है. हम भारतवासियों ने उसकी भक्ति भी सबसे ज्यादा की हैं. अभी वही भगवान शिव स्वयं आकर हम भक्तों को भक्ति का फल देते हैं, इस पवित्र भूमि भारत पर सतयुग की स्थापना कर रहे हैं. ब्रहमाकुमारीस वही परमात्मा के डायरेक्ट गोद लिए हुए बच्चे (आत्मायें) है जो गुप्त वेश में आये भगवान शिव को पहचान कर, उसकी श्रीमत् पर चलकर अभी भारत को स्वर्ग बनाने में कार्यरत हैं. इसके लिए ब्रहमाकुमारीस अपने जीवन में पवित्रता, सत्यता, स्वच्छता और सादगी को अपनाते हैं. अपनी आत्मा को परमपिता-परमात्मा शिव के साथ सच्चा योग कर, आत्मा के जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म करते हैं और आत्मा को फिर से दिव्य-गुणों और परमातम शक्तिओं से भरपूर करते हैं.

बापदादा के महा-वाक्यों को सुनकर हमारे दिल से यही आवाज निकलता हैं - हे मेरे प्यारे भारतवासियों अब जागो और हमारी पवित्र भूमि, देव भूमि भारत में अवतरण हुए परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा को पहचान कर उससे स्वर्ग का वर्सा प्राप्त करो.

आज की साकार मुरली से हमारे प्राणप्यारे-परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा शिव ने हमारी भारत भूमि को स्वर्ग बनाने के लिए उच्चारण किये हुए महा-वाक्यों को शिवबाबा की याद में रहकर फिर से पढ़ेंगे.

- शिवबाबा कहते हैं बच्चे प्राथना में कहते हैं - हे प्रभू, हे ईश्वर. बाबा नहीं कहते, है तो परमपिता ना. परन्तु बाबा अक्षर जैसे दब जाता है, परमात्मा अक्षर ऊंचा हो जाता है. मुझे ही बुलाते हैं - हे प्रभू, नैन हीन को राह बताओ. तुम्हारी आत्मायें कहती हैं - बाबा हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति की राह बताओ. प्रभू अक्षर कितना बड़ा है. पिता अक्षर हल्का है. यहाँ तुम जानते हो स्वयं परमात्मा शिव-बाप आकर हमको समझाते हैं.

- शिवबाबा कहते हैं मैं आया हूँ बच्चों की सेवा में. तुम सब बच्चे भी भारत की अलौकिक सेवा में हो. जो सेवा तुम्हारे सिवाय और कोई कर नहीं सकते. तुम भारत के लिए ही करते हो. मेरी श्रीमत् पर पवित्र बन और सारे भारत को पवित्र बनाते हो. बापू गांधी की भी आशा थी कि भारत में रामराज्य हो. अब कोई मनुष्य तो रामराज्य बना न सके. भारत को फिर से रामराज्य बनाना तो एक परमात्मा (प्रभू) का ही काम हैं. अब तुम बच्चों का भारत के लिए कितना लव है. भारत की सच्ची सेवा तो तुम करते हो.

- शिवबाबा कहते हैं तुम अभी भारत में दैवी राज्य स्थापन कर रहे हो. तुमको भारत के लिए ही फ़खुर है. जानते हो सतयुग में यह पावन भूमि थी, अब पतित बन गई हैं. अभी तुम जानते हो कि हम गुप्त रिती से बाप द्वारा भारत को फिर से पावन भूमि वा सुखधाम बना रहे हैं. तुम्हें गुप्त बाप की श्रीमत् भी गुप्त मिलती हैं. ईश्वरीय श्रीमत् पर तुम भारत की ऊंच ते ऊंच सेवा अपने तन-मन-धन से कर रहे हो.

- शिवबाबा कहते हैं यह तो तुम जानते हो यह पतित दुनिया का विनाश तो होना ही है. तुम ही शिव शक्तियाँ हो. शिव शक्ति यह गोप भी हैं. तुम गुप्त रिती भारत की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हो. आगे चल सबको पता पड़ेगा. तुम्हारी है ईश्वरीय श्रीमत् पर रुहानी सेवा. तुम अभी गुप्त हो. भारत के लोग जानते ही नहीं कि यह ब्रहमाकुमारीस तो भारत को अपने तन-मन-धन से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ सचखण्ड बनाते हैं. सतयुग में भारत ही सचखण्ड था, अब कलियुग में झूठखण्ड है. सच तो एक ही बाप है जिनके लिए ही गाते है - सत्य ही शिव है, शिव ही सत्य हैं.

- शिवबाबा कहते हैं अभी तुम बच्चों को दिल में उमंग है कि हम भारत की सच्ची रुहानी सेवा कर रहे हैं. हम रावण राज्य का विनाश कराए रामराज्य स्थापन करते हैं, इसमें कोई तकलीफ की बात नहीं. बाकी सारी दुनिया रावण की मत पर है, तुम हो राम की श्रीमत् पर. राम कहो, शिव कहो, एक ही भगवान के नाम हैं.

- शिवबाबा कहते हैं तुम बच्चों ने आधाकल्प देह-अभिमानी होकर पार्ट बजाया है. अब अशरीरी बनो, अपने को आत्मा समझो. तुम जानते हो यह रुहानी बाप रुहो को समझा रहे हैं. रुह ही इस शरीर द्वारा पार्ट बजाती हैं. आत्मा ही कहती है मैं प्राइममिनिस्टर हूँ, फ़लाना हूँ. अब तुम्हारी आत्मा कह रही है हम आत्मा पुरुषार्थ कर दैवी-देवता बन रही हूँ.

- शिवबाबा कहते हैं घड़ी-घड़ी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे. तुम भारत के मोस्ट ऑबीडियन्ट सर्वेन्ट हो. भारत को स्वर्ग बनाने का कर्तव्य भी करते हो गुप्त रिती से. तुम्हें नशा है कि हम ईश्वरीय गर्वमेन्ट के रुहानी सर्वेन्ट हैं. भारत को फिर से स्वर्ग बनाते हैं.

ॐ शांति.